Regarding leather industry in Punjab

श्री चरनजीत सिंह चन्नी (जालंधर) : सभापति जी, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान पंजाब में चमड़े के कारोबार और लैदर इंडस्ट्री के हालात की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं । पंजाब में खास तौर से जालंधर चमड़े के कारोबार की बहुत बड़ी इंडस्ट्री है । उदाहरण के तौर पर बताना चाहता हूं कि फुटबॉल चमड़े से बनती है और चमड़े का कारोबार पंजाब में बंद हो गया है इसलिए यह इंडस्ट्री बैठती जा रही है । जितनी हड्डा-रोड़ियां थीं, वे बंद हो गई हैं । कोई भी जानवर यदि मर जाता है, तो उनके शरीर को संभालने के लिए कोई हड्डा-रोड़ियां नहीं हैं । जालंधर में चमड़े का कारोबार बंद होने के कागार पर पहुंच चुका है । विदेशों से जो चमड़ा आता है, उस पर आयात शुल्क बहुत कम कर दिया गया है, जिसकी वजह से हमारे यहां चमड़े का कारोबार करने वालों को बहुत दिक्कत आ रही है, क्योंकि बाहर से सस्ता चमड़ा उपलब्ध हो रहा है और हमारा यहां का चमड़ा महंगा होने के कारण उतनी लागत नहीं निकल पाती है । यहां तक कि हमारे यहां चमड़े की उपलब्धि ही नहीं है । जो पशु मरते हैं, उनके लिए किसी को ठेका नहीं दिया जाता, कोई हड्डा-रोड़ी का इंतजाम नहीं है, इसलिए मेरा सरकार से निवेदन है कि पंजाब में मर रही चमड़ा इंडस्ट्री को संभाला जाए ।